International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(4): 98-103

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(4): 98-103
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 19-04-2015
Accepted: 24-05-2015

डॉ0. हर्षबाला
Assistant Professor
Janki Devi Memorial College
Karol Bagh University of Delhi

Correspondence:
डॉ0ण हर्षबाला
Assistant Professor
Janki Devi Memorial College
Karol Bagh University of Delhi

जातकशास्त्र व प्रश्नशास्त्र में बाधक ग्रहों का स्वरूप, उनके दोष एवं शान्ति के उपाय

डॉ0 हर्षबाला

जातकशास्त्र एवं प्रश्नशास्त्र में ग्रहों व अलौकिक शक्तियों के द्वारा दी जाने वाली पीड़ाएँ व कृपा का शुभाशुभ फल प्रतिपादित किया गया है। जिसमें देवताओं का उग्र तथा शान्त स्वरूप प्रतिपादित है। दैवानुकूल्य का अर्थ है, पूर्वजन्मकृत कर्मफल की अनुकूलता तथा दैव प्रतिकूलता का अर्थ है, पूर्वजन्म कृत कर्मफल की प्रतिकूलता। यदि देव प्रतिकूल हो तो उन्हें अनुकूल करने का प्रयास किया जाना चाहिए। देवता का उग्र तथा शान्त स्वरूप उसके द्वारा अधिष्ठित राशि की सत्वादि प्रवृत्ति पर निर्भर करता है। प्रश्नशास्त्र में अलौकिक प्रश्न के भेदों उपभेदों में बाधा व बाधक ग्रहों व अलौकिक शक्तियों का स्वरूप प्रतिपादित किया गया है।

1) बाधा ''बाध्'' धातु व ध×k प्रत्यय से व्युत्पन्न बाधा' शब्द के अनेक अर्थ पीड़ा, कष्ट, यातना, सन्ताप, छेड़छाड़, परेशानी आदि माने गए हैं। **बाधक का अर्थ**'' बाध्'' धातु ''ण्वुल्'' प्रत्यय से व्युत्पयर्थ[1] बाध शब्द को बाधा देने वाला, कष्ट देने वाला, उन्मूलन या उत्पीड़क आदि अनेक अर्थों से प्रतिपादित किया गया है। बाधक स्थानों के अधिपति होकर ग्रह यदि अनिष्ट स्थानों में बैठे तो उनके देवताओं की पीड़ा होती है। इन दोषों का ज्ञान प्रश्न व जन्मकुण्डली से ज्ञात करके दैवज्ञ को इसकी शान्ति के उपाय करने चाहिए। क्योंकि देवताओं की अनुकूलता होने पर सब अनुकूल होता है। ये देवता कुण्डली में बाधक होकर व्यक्ति को पीड़ा देते है। बाधा स्थान व राशियाँ के प्रतिपादन में तीन पक्ष अधिक प्रचलित हैं, जिसमें सर्वसम्मति से दो मत स्वीकृत हैं। **प्रथम मत**[2] में आरूढ लग्न के चर स्थिरादि होने पर बाधक स्थान का निश्चय किया जाता है। चर से एकादश राशि, स्थिर से नवम राशि, द्विस्वभाव से सप्तम राशि है तथा द्वादश राशियों के निम्न बाधक स्थान है।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
बाधा' क स्थान	11	10	9	2	1	12	5	4	3	8	7	6

पाराशरमुनि ने उपरोक्त मत को ही स्वीकृत किया है।[4] **द्वितीय मत** कुछ विद्वानों के मतानुसार चर, स्थिर, द्विस्वभाव राशियों का आरूढ़ स्थान से केन्द्र स्थान बाधक स्थान होता है। आरूढ़ लग्न चर, स्थिर व द्विस्वभाव राशियाँ होने पर शेष तीन क्रमशः चर, स्थिरादि राशियाँ बाधक होंगी। प्रश्नमार्ग के व्याख्याकार गुरुप्रसाद गौड़ ने एक अन्य टीकाकार का मत लिया है कि आरूढ़ राशि से तीन राशियाँ अगले क्रम वाली राशियाँ बाधक राशियाँ होगी जैसे–आरूढ़ वृष हो तो मिथुन, कर्क, सिंह, बाधक राशियाँ होगी। लेकिन यह सर्वसम्मत नहीं है केवल प्रेतबाधा में इसका विचार किया जाता है। **तृतीय मत** इसमें केवल चर राशियों के मुख्य स्थान इस प्रकार है –

राशि	**चर**	**स्थिर**	**द्विस्वभाव**
बाधक स्थान	कुम्भ	वृश्चिक	धनु

यदि दशा स्वामी बाधक ग्रह के साथ हो या बाधक स्थान में पापग्रह हो तो उस राशि की दशा विपत्तिदायक व शोक बन्धनादि फल सूचक होती हैं। इसमें 1, 4, 7, 10 राशियों के क्रमशः 11, 2, 5, 8 राशियाँ बाधकारक हैं। देवपीड़ा के अतिरिक्त (1) धर्म, (2) सर्प (3) पितृ (4) गुरु (5) ब्राह्मण (6) भूत (7) प्रेत आदि पीड़ाएँ भी समाहित हैं। ऐसी पीड़ाओं से ग्रस्त होने के उपरान्त व्यक्ति में दृष्टि दोष उत्पन्न हो जाता है। इसमें देवताओं द्वारा दी जाने वाली पीड़ा व बाधा इस प्रकार है।

2) दैवबाधा शब्द का अर्थ–देव शब्द की व्युत्पत्ति ''दिव्'' धातु व ''अच्'' प्रत्यय से की गई है।[5] जिसके अनेक अर्थ दिव्य, स्वर्गीय, ब्राह्मण, दिव्यपुरुष आदि कहे गए हैं। देव बाधा से तात्पर्य देवताओं द्वारा दी जाने वाली पीड़ा है। सूर्यादिग्रहों का द्वादश राशियों में देवता रूप व देवतत्व ज्ञात करके ज्योतिषशास्त्र अनिष्ट निवारण के उपाय प्रतिपादित करता है। द्वादश राशियों में स्थित ग्रहों की देवतत्व इस प्रकार है[6]।

द्वादश राशियों में स्थित ग्रहों की देवरूपता

	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मेष	ब्रह्म बोध के 10 अंश से अधिक ब्रह्मा का, श्रेष्ठ जनों द्वारा प्रतिस्थापित 10 अंश से कम से नीच लोगों द्वारा प्रतिस्थापित	चामुण्डी	भूत राक्षस ब्रह्मराक्षस		शंकर के भूतगण ब्राह्मण के अभिचार	शंकर के भूतगण यक्ष, राक्षस	असाध्य अपस्मार
वृष	यक्षिणी	यक्षिणी धर्मदैव	भैरवी यक्ष की स्त्रियां	गन्धर्व	यक्षिणी यक्ष अपस्मार	यक्ष, यक्षिणी	
मिथुन	विष्णु	विमान बोधक देवी	गन्धर्व रति		ब्राह्मणों का अभिचार	विद्याभ्यास अभिचार देव	
कर्क	धर्मदेव नाग	नाग, धर्मदेव	कृष्ण भगवती	जल पिशाच	अग्निहोत्री ब्रह्मण के	यक्ष यक्षिणी	
सिंह	इष्टदेव	भगवतीदेवी	यक्ष देवता शिवगण, भूत	नाग कन्या	राजा के सेवकों द्वारा अभिचार देवता	प्रतिष्ठापित यक्षिणी	
कन्या	विष्णु अवतार	विमान देवी बोधक	काम, यक्षिणी		नपुंसक देव	विद्याभ्यास अभिचार देव	
तुला	काली	धर्मदेव	भैरव यक्ष	गन्धर्व		यक्ष, यक्षिणी	
वृश्चिक	शंकर	नीच द्वारा पूजित चामुण्डी	नरभक्षिणी	ज्वर	शंकर के भूत गण	शंकर भूत राक्षस,यक्ष	
धनु	गन्धर्व, यक्ष	गन्धर्व, व्योम	कुक्षिशास्ता	कुपित ब्रह्म से चामुण्डी	देव कोप या बाधा	ब्राह्मण शाप	मणि संघात
मकर	शास्त्रदेव, पिशाच	प्रेत, शूल	उत्सव के विध्वंस से कुपित	युद्धभूमि पिशाच	भस्म पिशाच, अध्म गन्धर्व	अपस्मार देव	मणि संघात
कुम्भ	किरात	पिशाच	अभिचार कुपित	काल पिशाच	भस्म पिशाच अधमगन्धर्व	दानप्रभृति काल पिशाच	प्रेत पिशाच
मीन	यक्षिणी, ;स्त्री बोधक	व्योम, गन्धर्व की स्त्री	वीरभद्र	कवची	देवकोप	दुर्गा	गन्धर्व

बाधक ग्रहों की शान्ति के उपाय है। यदि ग्रहों की स्थिति अनिष्ट भाव में हो तो निम्न शान्ति की जाती है।[7]

	अनिष्ट स्थानों में ग्रह	शान्ति
1.	सूर्य	देवाराधन, स्तुति, मंत्रजाप
2.	चन्द्र	ब्राह्मण को हलवे का दान करना
3.	मंगल	दीपदान तथा हवन
4.	बुध	नृत्य द्वारा देव शान्ति
5.	गुरु	ब्राह्मण को भोजन व स्वर्णदान
6.	शुक्र	अधिक अन्नदान
7.	शनि	शूद्र, दासी व नीच वर्ग को भोजन दान

देव बाधक ग्रहों के लग्नादि भावों में होने पर निम्न शान्ति विधान किये जाते है।[8]

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
उपाय	मूर्ति प्रतिष्ठा करके, दान	मंत्र जाप	देव पूजा विधि पूर्वक	घर बनवा कर दान	देव तर्पण	औषध पचार बलिदान	नृत्य करना	बलिदान	देव उपासना	गणेश जी को लड्डू भाग, हाथी भोजन	स्कन्द बलि	अभि–षेक

धातु, मूल व जीव संज्ञक राशियों व ग्रहों में देव कोप के निम्न कारण होते हैं। लग्न में चर राशि–धातु संज्ञक ग्रह ,स्थिर राशि–मूल संज्ञक ग्रह तथा द्विस्वभाव राशि–जीव संज्ञक ग्रह के देव कोप के कारण पीड़ा होती है।[9]प्रत्येक ग्रह को लग्न मानकर उससे 12वें भाव में, यदि कोई पापग्रह हो तो उस पूर्व कथित देवों का कोप जातक को शारीरिक या मानसिक रूप से पीड़ा देता है। व्ययभावों में सूर्यादि ग्रहों का निम्न दोष होता है।[10] **सूर्य–**देव, शिव, स्कन्द की मूर्ति में विकलता, **चन्द्रमा–**दुर्गा कोप, **मंगल–**रक्षकों, पुलिस, हिंसक व्यक्तियों से मतभेद, **राहु या गुलिक–**सर्प के स्पर्श से मूर्ति अपवित्र होती है तथा देवकोपकारकग्रह निम्न भावों में पाप ग्रह होने पर निम्न कारण जानकर उपाय करना चाहिए।

भाव में पापग्रह	कारण	उपाय
लग्न	देवमूर्ति खण्डित होना	मूर्ति बनाकर प्राण प्रतिष्ठा
चतुर्थ	देवमन्दिर जीर्ण	जीर्णोद्धार
सप्तम		देवप्रसन्नता के लिये दीपदान, तथा नृत्य करना
अष्टम		पूजा
दशम		बलि

3) धर्मबाधा प्रश्न व जन्मकुण्डली में चतुर्थ स्थान व चतुर्थेश धर्म बाधा का निर्णय करते हैं। बाधकारक यदि चतुर्थ में या चतुर्थेश बाधा स्थान में हो तो धर्मदेव की बाधा होती है। इसके उपाय के लिए प्रत्येक संवत्सर के दिन भक्तिपूर्वक पूजा करनी चाहिए। शिव, शक्ति, विष्णु, गणेश, दुर्गा, श्री कृष्ण इत्यादि ये सभी धर्मदेव के अन्तर्गत गिने जाते हैं, इनकी प्रसन्नता के लिए पूजा अर्चना उपासना इत्यादि करनी चाहिए।[11]सर्पबाधा योग अन्य ग्रहों के साथ राहु की युति के आधार पर ज्ञात किया जाता है, प्रश्नमार्गकार ने सर्पबाधा के कारण सर्पबाधा दोष तथा इसके शान्ति के उपाय इस प्रकार वर्णित किये हैं।[12]

क्र.	सर्पबाधा योग	पूर्वजन्म का कर्म कारण ;दोष
1.	जन्म कुण्डली में चर राशियों में राहु	सर्प के अण्डों के नाश
2.	द्विस्वभाव में राहु	सर्प के बच्चों का मारना
3.	स्थिर में राहु	वृक्षों की अंधाधुंध कटाई
4.	राहु की मान्दि से युति राहु मान्दि से 5, 7, 9 में	
5.	राहु से केन्द्र में शनि, मान्दि दोनों ही राहु मंगल केन्द्र में	सर्प निवास में पेशाब, कुल्ला, थूकना, वमन आदि बाबी नाश के कारण
7.	यदि गुरु बाधाधीश होकर 6, 8, 12 में तथा राहु व केन्द्र में	श्रेष्ठ सर्पो की बाधा
8.	बाध स्थान में राहु, सूर्य या चन्द्रमा से सम्बन्ध	निम्न अधम उत्तम कोटि सर्पों की बाधा

शान्ति के उपाय 1 चतुर्थ में राहु–चित्रकूट शिला **2** बारहवें में राहु–नृत्य व गायन **3** लग्न, सप्तम में–दूध वितरण 4 छठे भाव–कीर्तन

4) मातृ–पितृ बाधा ज्योतिष शास्त्रानुसार सूर्य पितृ कारक है। यदि सूर्य बाधक स्थान में मंगल की राशि या नवमांश में हो तो पिता का शाप होता है। माता का कारक चन्द्रमा यदि बाधक स्थान में मंगल की राशि का नवमांश हो तो माता का शाप होता है।[13]इसमें मंगल की युति अनिवार्य है। **उपाय** इस शाप से बचने के लिए जीवित माता पिता की सेवा सुश्रुषा करना चाहिए।

5) प्रेत बाधा जब मनुष्य लापरवाही या किसी प्रकार की त्रुटि के कारण अपने पितृ या सम्बन्धियों का वार्षिक श्राद्ध आदि विधिपूर्वक नहीं करते, तो उनके सम्बन्धी प्रेत योनि में पहुँचकर, अपने बन्धुओं को पीड़ा पहुँचाते हैं। प्रेतबाधा का योग प्रश्नकुण्डली में इस प्रकार ज्ञात होता है।[14]अनिष्ट स्थान में गुलिक की स्थिति प्रेतबाधा की सूचक होती है। **1** गुलिक मंगल की राशि या नवांश में हो तो अग्नि काण्ड या शस्त्रप्रहार से **2** गुलिक शनि की राशि या नवांश में हो तो मृत व्यक्ति धन, या किसी बन्धु, से अचानक रहित होने पर प्रेत बन जाता है। **3** गुलिक राहु संयुक्त, दृष्ट हो तो सर्प के काटने से या प्रेत होकर 4 गुलिक पापयुक्त जलराशियों में हो जल में डूबने से दुर्घटना या मृत्यु होती है। इसी प्रकार गुलिक की स्थिति माता, पिता व भाई आदि के भावों में हो तो उनके प्रेत होने के कारण को बताता है। प्रेत की आयु व जाति जानने के लिए गुलिक जिस राशि या नवांश में स्थित हो, उस राशि की अवस्था के अनुसार प्रेत की आयु जानी जाती है। इसका विचार गुलिक के अंशों से भी किया जाता है। जैसे 10 अंश में बाल, अग्रिम 10–10 अंशों में प्रौढ़ व वृद्धावस्था जानी जाती है। इसी प्रकार द्वादश राशियों की जाति से प्रेत की ब्राह्मण आदि जाति का विचार किया जाता है।[15]प्रेतबाधा शान्ति के लिए तीर्थ स्थानों में पितृों का पिण्डदान आदि किया जाता है। इसके अतिरिक्त विधि–विधान व उपाय शास्त्रों व स्मृतियों में वर्णित किए गए हैं।

6) दृष्टिबाधा सामान्य भाषा में दृष्टि को नजर लगना कहा जाता है। ऐसे व्यक्ति जिन को भगवान शंकर के गण ग्रसित कर पीड़ित करते हैं उसे ही दृष्टि लगना कहते हैं, जिस पुरुष व स्त्री को दृष्टि बाधा होती है, उनके कुछ लक्षण इस प्रकार है।[16] लालची, निर्दयी, भयभीत, रोगी, धननाश करने वाला, धैर्य रहित होना इत्यादि पुरुष के लक्षण हैं। तेल मालिश, उबटन, गर्भिणी, नग्ना, अनुरक्ता, एकांत में रहने वाली इत्यादि स्त्री के लक्षण होते हैं।

7) शत्रुबाधा शत्रुओं द्वारा किया जाने वाली र्दुप्रक्रियाएँ मारण, मोहन, उच्चाटन आदि को दो भेदों में बाँटा गया है। **1. क्षुद्र अभिचार** यदि शुभ ग्रह बाधकाधिपति हो तो शत्रु द्वारा क्षुद्र अभिचार होता है। **2. महा अभिचार** यदि पापग्रह हो तो महा अभिचार होता है। शत्रुबाधा योग व शत्रुबाधा का विचार षष्ठ या षष्ठेश से किया जाता है। यदि बाधाकाधिपति षष्ठ में, षष्ठेश बाधक स्थान में हो, या युति हो अन्यथा, परस्पर एक दूसरे की राशि में हो, या एक साथ हो या एक दूसरे को देखे तो अभिचार होता है।[17] क्षुद्र अभिचार के योग व शान्ति के योग इस प्रकार हैं(1) सप्तम को छोड़कर केन्द्र में गुलिक तथा अन्य केन्द्र में (1,4,10) में केतु हो तो क्षुद्र अभिचार होता है। (2) द्वितीय योग में गुलिक यदि चन्द्र, आरूढ़ व लग्न से केन्द्र में शनि से दृष्ट या युत हो। (3) चतुर्थ नवांश में या भाव में गुलिक की स्थिति क्षुद्र अभिचार बोधक होती है। क्षुद्र अभिचार शत्रु द्वारा कोई विशेष वस्तु शयनकक्ष में लगाकर किया जाता है। उनको शास्त्रोक्त विधि से प्रभावहीन करके निकाल देना चाहिए।

8) विषबाधा ''विषल् व्याप्तौ'' धातु से विष शब्द की व्युत्पत्ति हुई है। विष उसे कहते हैं, जो शरीर में शीघ्र व्याप्त होकर शरीर को दूषित कर प्राण का नाश कर देता है।[18]सांसारिक झंझटों से मुक्ति के लिए अनेक जातक विष भक्षण करके, उसे मुक्ति मानकर शरीर का त्याग करते हैं जबकि अनेक स्थानों पर शत्रु द्वारा भी गुप्त रूप से राग, द्वेष, धन लोभ या अन्य तुच्छ स्वार्थ के कारण विष दिया जाता है, जिसका विचार भी कुण्डली में स्थित ग्रह स्थिति से किया जा सकता है। विष भक्षण योग[19] (1) यदि गुलिक व राहु चतुर्थ, पंचम, सप्तम अथवा अष्टम में एक साथ हो तो व्यक्ति स्वयं जहर खाता है। (2) यदि उपर्युक्त योग में षष्ठेश की युति हो तो शत्रु द्वारा जहर दिया जाता है। विष किस द्रव्य में मिलाकर दिया गया, इसका विचार मेषादि राशियों की स्थिति से करना चाहिए। आरूढ़ लग्न में किसी भी राशि के बलवान होने पर निम्न द्रव्य जाने जाते है।[20]

राशि	खाद्य पदार्थ	राशि	खाद्य पदार्थ
1, 8	घी में	10, 11	माल पुआ
3, 6	मधु में	4	द्रव पदार्थ
2, 7	मट्ठा, दही	5	पान के पत्ते में विष मिलाकर
9, 12	दूध या तरल पदार्थ		

9) बालग्रह पीड़ा बालकों में होने वाले रोगों व पीड़ा का उल्लेख प्रश्नमार्ग गुरुप्रसाद की पाथेय टीका में विस्तृत रूप से किया गया है।[21]बालग्रह का अर्थ है ''बालकों को पीड़ा देने वाले ग्रह''शार्ङ्धरसंहिता में बालकों में होने वाले 22 रोगों का प्रतिपादन किया गया है[22] तथा इसके लक्षण व निराकरण के उपाय, औषधि को भी इसमें समाहित किया है। वास्तव में यह रोग बालकों को पीड़ा देने वाले विशेष ग्रहों से होते हैं। पीड़ादायक ग्रहों की संख्या में मतभेद मिलता है। शार्ङ्धरसंहिता I[23] तथा माधवनिदान[24] में ग्रहों की संख्या 12 मानी गई है जबकि सुश्रुतसंहिता[25]में 9 मानी गई है। इनके नाम इस प्रकार हैं। (1) स्कन्दग्रह (2) स्कन्दअपस्मार ;(3) शकुनी (4) रेवती (5) पूतना (6) अन्धपूतना (7) शीतपूतना (8) मुखमण्डिका (9) नैगमेष तथा शार्ङ्धरसंहिता कथित अन्य (1) विशाखाग्रह (2) शुष्करेवतीग्रह हैं।[26]बालग्रहों द्वारा पीड़ा दिए जाने के अनेक कारण हैं यथा बच्चों को दुग्ध पिलाने वाली धाय या माता के द्वारा कुपथ्यों का सेवन तथा बच्चों के मलपुरीष त्याग करने के अनन्तर बच्चों के गुदा का प्रक्षालन न करने से, मांगलिक वस्तुओं का स्पर्श न करने से, डराने से, धमकाने या मारे गये बच्चों को ये पूतनादि ग्रह पूजा के लिये आविष्ट करते हैं।[26]सामान्यतः जातक व प्रश्नग्रन्थों में सरलता से इस पीड़ा व इसके योगों का उल्लेख नहीं मिलता है, यद्यपि आयुर्वेदिक ग्रन्थों में इस बाधा का उल्लेख किया गया है। प्रश्नमार्ग में निरूपित योग इस प्रकार हैं। बाल गृह पीड़ा योग शनि और बुध इन दोनों में से एक ग्रह अथवा मिथुन और मकर इन दोनों राशियों में से कोई एक राशि बाधक स्थान में स्थित हो तो बाल ग्रह पीड़ा होती है।[27] बालग्रह पीड़ा की शान्ति के उपाय है श्रीमद्भागवत् में जब भगवान कृष्ण द्वारा पूतना का वध किया गया था, तब गोपिकाएँ गोमूत्र, गोबर को बालक कृष्ण वेफ सभी अंगों में छिड़कती हैं तथा गाय की पूँछ कृष्ण पर फिराती हैं, जबकि आयुर्वेद में दशांग धूप से इसकी शान्ति की जाती है।[28]

10) ग्रह पीड़ा यह ग्रह शब्द आकाश स्थित ग्रह न होकर, उन दुष्ट आत्माओं के लिए है, जिनका शुभाशुभ विचार भूतविद्या में किया जाता है। इन दुष्ट ग्रहों के द्वारा भी मनुष्यों को पीड़ा दी जाती है। पीड़ा देने वाले ग्रहों की संख्या 27 बतायी गई है। प्रश्नमार्ग तथा सुश्रुत संहिता में इनकी प्रकृति के आधार पर इनके तीन भेद किए गए हैं।[29]1. बलि चाहने वाले बलि लेकर छोड़ देते हैं। 2.रमण करने की इच्छा वाले सौ बार बलि देने पर छोड़ते हैं। 3.मारने की इच्छा वाले कभी भी नहीं छोड़ते और मार देते हैं। इनकी कुटिलता के न्यूनाधिक्य के आधार पर इनके भिन्न–भिन्न लक्षण होते हैं इन 27 ग्रहों में 18 अधिक पीड़ादायक 7 कम पीड़ादायक ग्रह हैं, जिनके लक्षण इस प्रकार हैं।

पीड़ादायक ग्रहों के लक्षण

क्र	**पीड़ादा**यक ग्रह	**पीड़ित व्यक्ति के लक्षण**
1.	**देव**	स्नान किया हुआ, सुगन्धि वाला, तेजस्वी, ह्रष्ट–पुष्ट, देवस्थानों का प्रेमी कम बोलने वाला, कम पेशाब करने वाला, स्वल्प भोगी, क्रो**ध** न करने वाला, सुगन्धि ओर मालाओं का प्रेमी, धैर्यशाली, सुन्दर नेत्र वाला।
2.	**असुर**	देवनिदंक दैत्यों का प्रशंसक, ब्राह्मण द्वेषी, खुले नेत्रों वाला दुष्टात्मा, निर्भीक, अभिमानी, हँसी उड़ाने वाला, विस्मयकारी मुद्रावाला, बहुभोजी, कम्पित अंगों वाला।
3.	**नागपीड़ित**	पानी, शर्बत, दूध आदि पीने का इच्छुक, होठों पर जीभ फेरने वाला भूमि पर पर घूमने, लौटने वाला, लाल–लाल आँखों वाला, क्रोधी, पर्वत पर रहने वाला, कम्पित अगों वाला, दाँतों को किटकिटाने वाला और फूलों को चाहने वाला।
4.	**यक्षग्रस्त**	धीर, त्यागी, शीघ्र चलने वाला, लाल आँखों वाला, भोगों में मस्त कभी–कभी भोजन न करने वाला, क्षमाशील।
5.	**गन्धर्व**	कम बोलने वाला, सुगन्धित और माला का प्रेमी,गाने और नाचने वाला नदी के किनारे पर रहने वाला, परोक्ष बात जानने वाला, मुख से वाद्य जैसी धुन बजाने वाला, दूध पीने वाला, हँसने वाला, खेलने वाला ह्रष्ट–पुष्ट व्यक्ति।
6.	**राक्षस**	तेज दौड़ने वाला, अपना माँस खाने वाला, मद्य और खून पीने वाला निर्धन गाँव में रहने वाला, ताँबे के समान रंग वाला।
7.	**हेद्रु**	विस्मयकारी मुख मुद्रा वाला, नीचे की ओर मुँह लटकाने वाला, कुछ न देखने वाला, मुट्ठी बन्द कर कपड़ों में छुपाने वाला, जंघा पर सिर रखने वाला, क्रूर दृष्टि वाला।
8.	**कश्मल**	मल कीचड़ से शरीर लपेटने वाला, अपवित्र भस्म में सोने वाला, रोने और हँसने वाला, स्त्री द्वेषी, जीव–जन्तुओं को मारने या डराने वाला, दूसरों का धन हरने वाला, परिहास को जानने वाला।
9.	**निस्तेज**	तेजहीन, विह्वल, एकटक देखने वाला, परिहास को जानने वाला।
10.	**भस्मक**	व्यर्थ बकवास करने वाला, सबसे द्वेष करने वाला, ठण्डे हाथ–पैर वाला, तिरछी दृष्टि वाला, खाने के बाद भी तृप्त न होने वाला, काले रंग वाला, निर्मल व्यक्ति।
11.	**पितृ**	कुशाओं पर पिण्ड देने वाला, प्रेतों का तर्पण करने वाला, तिल, माँस और गुड़ का इच्छुक तथा शान्त स्वभाव वाला।
12.	**कृश**	एकान्तवासी, कमजोर अंगों वाला दौड़ने वाला, कठोर स्वर वाला, पूँछने पर भी न बोलने वाला, खाने पर भी तृप्त न होने वाला।
13.	**विनायक**	पैर की धूल धोने वाला, खूब डकार लेने वाला, बार–बार उल्टी करने वाला, दाँतों को कटकटाने वाला ग्रह विनायक होता है।
14.	**प्रलाप**	अंगों को तोड़ने–मरोड़ने वाला, कमजोर शरीर वाला, नाचने वाला, स्वस्थ, बगैर बात के हँसने वाला, बहुभोगी, बहुत बोलने वाला।
15.	**पिशाच**	कठोर रूखे स्वर वाला, निर्जन टूटे–फूटे स्थान में रहने वाला, बकवास करने वाला, सुगन्धित शरीर वाला, अपवित्र, लालची।
16.	**अन्त्यज**	लोगों को ताड़ना देने वाला, चंचल और लाल नेत्रों वाला, लोभी, मल और कीचड़ लपेटने वाला, भोगी, कल्पित अंगों वाला, दीन–हीन वाणी वाला।

क्र	**पीड़ादा**यक ग्रह	**पीड़ित व्यक्ति के लक्षण**
17.	**योनिज**	बहु भोजी, चिन्तित, बातों को न जानने वाला, माँस खाने वाला, चंचल नेत्रों वाला, मान–मर्यादा की चिन्ता न करने वाला, भेड़ जैसी गन्ध वाला
18.	**भूत**	लोगों को मारने वाला, ऊँचे वृक्षों पर चढ़ने वाला, अपशब्द बोलने वाला, सबका अनुकरण करने वाला विकृत आकृति वाला।

सुश्रुतसंहिताके `अनुसार[30] मनुष्य के अतिरिक्त देव ,यक्ष ,गन्धर्व ,किन्नर , पिशाच, राक्षस, भूत तथा सिद्ध ये सब देवयोनियाँ मानी गई हैं और ऐसा माना गया है इनका प्रभाव अपवित्र मनुष्य की छाया पर अधिक पड़ता है । यद्यपि मानव शरीर त्रिदोष विकारों से ही रोगी होता है तथापि भूत, पिशाच द्वारा होने वाले रोगों का कारण भूत पिशाच नहीं होते। सुश्रुत मुनि ने देव ग्रहो की संख्या अनगिनत मानी है तथा ग्रह पीड़क के आठ भेद माने हैं। (1) देवता (2) दैत्य (3) गन्धर्व (4) यक्ष (5) पितर (6) भुजर्घै (7) राक्षस (8) पिशाच। इनके लक्षण निम्न हैं।

ग्रहपीड़क	**लक्षण**
देव	सन्तुष्ट, पवित्र, माला सुगन्धि का अधिपति, सत्य बोलने वाला, निरन्तर संस्कृत में बोलने वाला।
दैत्य	पसीना अधिक, ब्राह्मण, देव गुरु के दोषों का वक्ता, निडर, तिरछे नेत्रों वाला, नास्तिक, अधिक खाने पीने वाला।
गन्धर्व	प्रसन्नचित, नदी तट पर आनन्दित रहने वाला, संगीत प्रेमी, गन्धप्रेमी, नृत्य करने वाला।
यक्ष	ताम्र वर्ण नेत्र, रकत्तवर्ण वस्त्र, गंभीर प्रवृत्ति, अल्पभाषी, सहनशील
पितृग्रह	शान्तस्वभाव, माँस अभिलाषी, तिल गुड़ का इच्छुक
नाग	साँप के समान लेटने वाला, जिह्वा से ओष्ठ चाटने वाला गुड़ शहद, दुग्ध का इच्छुक
राक्षस	माँस, रक्त, सुरा पीने खाने वाला, कठोर स्वभाव, लड़ने वाला, इधर उधर विचरण करने वाला
पिशाच	हाथ ऊपर, दुबला, दुर्गन्धयुक्त देह, अधिक खाने वाला, शीतल जलाभिलाषी, रात्रि भ्रमण करने वाला।

सुश्रुतमुनि ने इन पीड़ादायक ग्रहों के पीड़ाकाल का निर्धारण इस प्रकार किया है।[31]

क्र.	**ग्रह**	**समय**	क्र.	**ग्रह**	**समय**
1.	देव	पूर्णिमा	5.	पितृ	अमावस्या
2.	असुर	प्रातः, सायः, सन्ध्या	6.	भुजंग	पंचमी
3.	गन्धर्व	अष्टमी	7.	राक्षस	अर्धरात्रि
4.	यक्ष	प्रतिपदा	8.	पिशाच	चतुर्दशी

ग्रहपीड़ा किन कारणों से होती है इनसे बचने के क्या उपाय हैं यह जानकर ही निवारण किया जाता है। ग्रह पीड़ा के छः निम्न कारण हैं जिससे मनुष्य को बचना चाहिये।[32] (1) अवमानना (2) दृणग्रस्तता (3) बैर (4) विघ्न (5) भाग्यविपर्यय (6) ईश्वरेच्छा। पीड़क ग्रहों के स्थान–इन पीड़क ग्रहों से बचने के लिए निम्न स्थानों पर नहीं जाना चाहिये।[33]1. गुफा, 2. कूटाशम, जहाँ आवाज गूँजती है, 3. पर्वत शिखर, 4. वन, 5. उपवन, 6. नदी, 7. बावली, 8. जलाशय, 9. पोखर, 10. झरने के भीतर या किनारे पर, 11. नदी संगम, 12. नदी के भंवर में, 13. गोशाला, 14. सूने मकान, 15. एक वृक्ष जो अकेला, 16. श्मशान, 17. टूटे–फूटे मन्दिर, 18. धन गड़े स्थान पर, 19. चौराहे, 20. सुरंग, 21. ग्राम सीमा, 22. विशाल इमारत, 23. देवी मन्दिर, 24. इमारत, 25. हवेली, 26. तीर्थस्थल, 27. बाग–बगीचे। उपर्युक्त स्थानों में जाने पर पापी ग्रह मनुष्य को अपनी चपेट में लेकर पीड़ित करते हैं। **निष्कर्ष** रूप में प्रश्नशास्त्र व जातक शास्त्र आधुनिक युग के पीड़ित मनुष्य के लिये यह एक मार्गदर्शक के रूप में उपयोगी शास्त्रा है। प्रस्तुत शोध में प्रतिकूलता के निराकरण के उपाय के साथ अनुकूलता की वृद्धि के उपाय भी वर्णित हैं। क्योंकि प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सभी विषयों का सुनियोजित ढंग से व क्रमबद्ध रूप प्रस्तुत किया गया है। इस शोध प्रबंध में अत्यधिक बड़े स्तर पर विस्तृत विषयों को तालिकाओं के माध्यम से स्पष्ट किया गया है। जो अध्येत्ता के अध्ययन को सरल बनाने में उपयोगी होने के साथ रुचिवर्धन में भी सहायक होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आप्टे, वामन शिवराम– संस्कृत हिन्दी कोश, पृ. 713
2. वही, पृ. 713
3. आरूढराशै चर आयराशौ स्थिरे तु बाधा नवमे विचिन्त्य
   तथोभये कामगृहे त्रायाणां केन्द्रेषु चैषामिति केचिदाहुः।।
   कुंभ श्चराणामळिचापसिंहस्त्रीणामळिर्गोवृषभस्य नव्रफः।
   कुंभस्य कर्को मिथुनस्य धनवी मीनस्य चापं बाधकं स्यात्।। प्र. मा., 15/111, 112
4. बृ.पा.हो.शा., 51/20
5. आप्टे, वामन शिवराम– संस्कृत हिन्दी कोश, पृ.
6. प्र.मा., 15/204–220
7. प्र.मा., 15/18
8. प्र.मा., 15/147
9. वही, 15/21
10. प्र.मा., 15/10–13
11. प्र.मा., 15/30
12. वही, 15/31–33
13. प्र.मा., 15/37, 39
14. वही, 15/42, 43
15. प्रेतस्य बालता वाच्या मान्दौ राश्यादिसंस्थिते।
    राश्यन्तस्थें जरन्नेव मध्यस्थे वय उफह्यताम्।।
    चन्द्राद्यालयतद्युक्ते मान्दावेकादिकं वयः।
    प्रेतस्यैके स्वबाल्यदिवशादुड़पत्तेर्वयः।। प्र.मा., 15/46, 47
16. वही, 15/51–53
17. प्र.मा., 15/135, 138, 139, 140
18. चं.सं., 23/1, 2
19. मित्रो पुत्रो सप्तमे वाष्टमे वा मान्दौ वाहौ तिष्ठति क्ष्वेघभुक्तिः।
    तत्रास्थे चारी श्वरेरिप्रयुक्ता विज्ञातव्या सा न चेद्देवयोगात्। प्र. मा., 15/132, 13
20. आरुढे सिंहराशौ कटुकरसयुते नागवल्लोदलाद्यै,
    भौमक्षेत्रो तथाज्ये मधुनि बुधगृहे तव्रफदधनोः सितर्क्षे
    क्ष्वेळे वा कादळे वा विषममरगुरोर्धम्निनिक्षिप्य दतं
    पूपादौ मन्दगेहे लवणरसवति द्रव्य इन्दोर्द्रवे वा।। वही, 15/132, 133
21. मन्दचन्द्रजयोरेको यद्वा मिथुननन्रकयोः।
    बाधकस्थानसंस्थश्चेद्वालपीड़ां विनिर्दिशेत्।। प्र.मा., 15/131
22. दौर्बल्यं गात्राशेष श्च श्Õयामूत्रां कडूणक रोदनं चाजगल्लीस्यादिति द्वाविंशति स्मृताः।। शार्घै.सं., 7/2–188
23. तथा बालग्रहः ख्याता द्वादशैव मनी श्वरैः, स्कन्दग्रहो विशाखः स्याच्छवग्रह श्च पितृग्रहः।
    नैगमैयग्रहस्तद्वच्छकुनि शीतपूतना, मुखमण्डिनका तद्वत्पूतना चान्धपूतना,
    रेवती सघ्ख्याता तथा स्याच्छुष्करेवती ।। वही., 7/2–189/23
24. मा.नि., 68/18, 19

25. सु.सं., 27 / 4, 5 / 142
26. वही, 27 / 6 / 142
27. मन्दचन्द्रजयोरेको यद्वा मिथुननकयोः।
बाधकस्थान संस्थश्चेद्वालपीड़ां विनिर्दिशेत्।। प्र.मा., 15 / 131
28. वही, 15 / 196,97
29. स्थूलाक्षस्तवरितगतिः स्वपफेनलेही, निद्रालुः पतति च कम्पयते योति।
य श्चाद्रि द्विरदनगादि विच्युतः सन्, संसृष्टो न भवति वाद्धकेन जुष्टः।।
सु.सं., 60 / 16
30. सु.सं., 60 / 8–15
31. देवग्रहाः पौर्णमाख्यामसुराः सन्ध्ययोरपि।, गन्धर्वाः प्रायशो{ष्टम्यां यक्षा श्च प्रतिपद्यथ।
कृष्णाक्षये च पितरः प श्चम्यामपि चोरगाः। राक्षांसि निशि पैशाचा श्चतुर्दश्यां विशान्ति च।।
सु.सं., 60 / 17, 18
32. प्र.मा., 15 / 54, 55
33. वही, 15 / 56–60